ऋग्वेद का सामाजिक, सांस्कृतिक
और
ऐतिहासिक सार

महामहोपाध्याय
प० विश्वेश्वरनाथ रेउ

राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम)
उदयपुर

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर

मुद्रक

जगदीशप्रसाद, एम ए बी-काम
एग्युकेशनल प्रेस आगरा

मूल्य ६ ०० रुपये

प्रथम संस्करण माघ १९६४

प्रकाशकीय

ऋग्वेद ससार का प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है और आर्यों के धम सस्कृति सभ्यता और इतिहास का यही एक मात्र मूल स्रोत है।

महामहोपाध्याय प० विश्वेश्वरनाथ रेउ न प्रस्तुत ग्रथ म ऋग्वद के मत्रो के आधार पर तत्कालीन सामाजिक सास्कृतिक और एतिहासिक तथ्यो का पुनरावलोकन प्रस्तुत किया है। राजस्थान साहित्य अकादमी न इस ग्रन्थ की उपादेयता के महत्व को समझ कर इसके प्रकाशन का निणय लिया है। शोध कर्ताओ तथा ऋग्वद का सार जानन वाले व्यक्तियो को इससे बड़ी सहायता मिलेगी।

प० विश्वेश्वरनाथ रेउ वदिक-साहित्य के जान-मान विद्वान् है। उन्होंने डा० अविनाशचन्द्रदास कृत Rigvedic Culture (ऋग्वेद कालीन सस्कृति) का भी हिन्दी अनुवाद तयार किया है।

साहित्य अकादमी आभारी है कि रेउ जी न सुधी पाठको के लिये यह उपयोगी ग्रन्थ तयार किया।

विश्वास है कि ऋग्वेद का सामाजिक सांस्कृतिक एव ऐतिहासिक सार' पाठकों का आदर प्राप्त करेगी।

शातिलाल भारद्वाज 'राकेश'

वास्ते निदेशक

राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम)

उदयपुर (राजस्थान)

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक में सायण के मतानुसार ऋग्वेद के चयन उन मन्त्रों के आशय दिये गए हैं जिनमें उस समय की सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक बातों का झलक मिलती है।

इसमें ऋग्वेद के मण्डलों सूक्तों और ऋचाओं का वही क्रम रक्खा गया है जो उक्त संहिता में मिलता है। परन्तु बीच में आए स्तुतियों और उपासनाओं आदि से सम्बन्ध रखने वाले मन्त्रों को छोड़ दिया गया है।

इस ग्रन्थ में मत मतान्तरों के झमेले को छोड़कर सायण भाष्यानुसार केवल ऋग्वेद में मिलने वाले, उपर्युक्त विषयों से सम्बद्ध, तथ्यों को ही उपस्थित किया गया है जिससे सुविज्ञ पाठक स्वयं ही अपना मत निश्चित कर सकें।

वैसे तो ऋग्वेद पर आगे-पीछे अनेक भाष्य लिखे गए हैं परन्तु सायण का भाष्य ही विशेष प्रसिद्ध प्रचलित और उपयोगी माना जाता है। सायण ने ऋग्वेद भाष्य के अतिरिक्त अन्य संहिताओं और ब्राह्मणों पर भी भाष्य लिखे थे। इनका लिखा ऋग्वेद संहिता पर का भाष्य यज्ञपरक (आधिदैविक) है।

सायण विजयनगर के राजाओं के मन्त्री थे। इनके पिता का नाम सायण और बड़े भाई का नाम माधव था। सायण ने यह भाष्य अपने बड़े भाई की प्रेरणा से लिखा था इसी से इसे 'माधवीय भाष्य' भी कहते हैं। सायण का जन्म विक्रम संवत् १३७५ में, मृत्यु वि० सं० १४४४ में तथा भाष्यों का रचना काल वि० सं० १४०७ से १४०६ के बीच माना जाता है।

आशा है इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ने से जनसाधारण को ऋग्वेद के समय की संस्कृति, सभ्यता, आचार विचार, रहन सहन इतिहास उपाख्यान तथा धारणाओं आदि को मूलरूप में जानने में अवश्य ही कुछ सहायता मिलेगी और इस पुस्तक का इस रूप में पाठकों के सामने उपस्थित करने में यही हमारा मुख्य ध्येय है।

—विश्वेश्वरनाथ रेउ

२९६७

समर्पण

राजस्थान के प्रसिद्ध चिकित्सक
राज्यरत्न डा० निरञ्जननाथ जी गुटू
की
पवित्र स्मृति मे सादर और सप्रेम

—लेखक

ऋग्वेद मे मिलने वाली कुछ सामाजिक, सास्कृतिक और ऐतिहासिक बाते

प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के पहले मन्त्र म अग्नि की स्तुति की गई है और उसे पुरोहित कहा है।

(यहाँ पर अग्नि म उसके अधिष्ठाता तेजोमय रूप का तात्पर्य है और उसे पुरोहित इसलिये कहा है कि उसके बिना यज्ञ का सपादन नही हो सकता। अग्नि का एक नाम अङ्गिरा भी दिया है। कुछ लोगों का मत है कि अङ्गिरा के वश के ऋषियो न ही यहाँ पर अग्निपूजा का प्रचार किया था। इसी से अग्नि को अङ्गिरा कहने लगे।)

२ रे सूक्त के १ ले मन्त्र म वायु की स्तुति है और ४ थे मन्त्र में उसके साथ ही इन्द्र का भी सोम-पान के लिए आह्वान किया गया है। ७ वें मन्त्र म मित्र और वरुण का उल्लेख है।

(ईरानी लोग भी मिथ और वरुण के नाम म इनकी पूजते है)

३ रे (अश्वि) सूक्त के १ ले मन्त्र म अश्विनीकुमारो का वर्णन है।

(इनकी उत्पत्ति के विषय म ऋग्वेद के दसवें मण्डल के १७ वें सूक्त म लिखा है कि सूर्य द्वारा त्वष्टा की कन्या सरण्यू के गर्भ म ये दोनो उत्पन्न हुए थे।) ७ वें मन्त्र म विश्व देवो का उल्लेख है और १ वें म सरस्वती शब्द उक्त नाम की नदी और देवी के लिए आया है। ४ थे सूक्त के ८ वें मन्त्र म इन्द्र-द्वेषियो के इस देश और अन्य देशो से दूर हो जाने की कामना की गई है।

(यद्यपि पारसी लोग वरे—थघ्न के नाम से हमारे वृत्रघ्न इन्द्र की पूजा करते हैं तथापि अवस्ता के दसवें यशत मे इन्द्र को पाप-वृत्ति कहा है और उसके पूजकों को निकाल देने को कहा गया है। इससे आर्यों के इन दलों म मत भेद हो जाना पाया जाता है।)

८ वें मन्त्र में इन्द्र का सोम-पान कर वृत्रासुर को मारना बतलाया है।

(पुराणों के अनुसार इन्द्र ने दधीचि की हड्डी से बनाये वज्र से वृत्र का वध किया था। कुछ विद्वान् वृत्र से मेघ का तात्पर्य लेते हैं। अर्थात् इन्द्र ने मेघ को क्षत विक्षत कर वृष्टि करवाई थी। इसी प्रकार वे ऋग्वेद में प्रयुक्त अहि शब्द का अर्थ भी मेघ ही करते हैं।)

५ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में जो 'स्तोम' और 'उक्थ' शब्द आये हैं सायण ने इनका अर्थ क्रमशः सामवेद के मन्त्र और ऋग्वेद के मन्त्र किया है।

६ ठे सूक्त के ५ वें मन्त्र में पणियों द्वारा चुराकर छिपाई गई गायों का इन्द्र द्वारा मरुद्गण (वायुदेवों) की सहायता से उद्धार करना लिखा है।

(इन्द्र ने इनका सरमा नाम की कुतिया की सहायता से पता लगाया था।)

७ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में जो पञ्चक्षिति शब्द आया है उसका अर्थ सायण ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और निषाद लिखा है।

(इसी प्रकार द्वितीय मण्डल के दूसरे सूक्त की १० वीं ऋचा में आये पञ्च कृष्टि और तृतीय मण्डल के ५९ वें सूक्त की ८ वीं ऋचा में आये 'पञ्चजना' शब्द का भी यही अर्थ किया है।)

११ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में बलासुर का गाय चुराना और इन्द्र का उसकी गुफा का पता लगाना लिखा है। इसके १३ वें सूक्त को आप्री (प्रीति कर) सूक्त भी कहते हैं।

इस सूक्त की १२ ऋचाओं में भिन्न भिन्न १२ नामों से अग्नि की स्तुति की गई है। वे नाम ये हैं —१ सुसमिद्ध २ तनूनपात् ३ नराशंस ४ ईडित (इलित) ५ बर्हि ६ देवीद्वार ७ नक्त-उषा ८ देव-द्वय ९ इडा (ला) (सरस्वती मही) १० त्वष्टा ११ वनस्पति और १२ स्वाहा।

१४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र वायु बृहस्पति मित्र अग्नि पूषा भग, आदित्य और मरुद्गणों को यज्ञ भाग देने का आदेश है। (बृहस्पति का एक नाम ब्रह्मणस्पति भी है। अनुग्रतेजवान सूर्य को पूषा कहते हैं। अदिति (देव-माता) की सन्तान आदित्य थे। कहीं इनकी संख्या ६ कहीं ७ कहीं ८ और कहीं १२ मानी गई है।) १८ वें सूक्त की १ ली ऋचा में उशिज्-पुत्र कक्षीवान् का उल्लेख है।

(पुराणों के अनुसार निःसन्तान कलिङ्ग राज ने पुत्र प्राप्ति की कामना से अपनी रानी को दीर्घतमा ऋषि के पास जाने का आदेश दिया था। परन्तु

उसन स्वय न जाकर अपनी दासी उशिज् को अपन बदल भेज दिया। उसी से कक्षीवान् का जन्म हुआ। कक्षीवान् ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ११६ स १२५ तक के सूक्तों के ऋषि हैं।)

२० वें सूक्त के देवता ऋभुगण हैं।

(ऋभु सुधन्वा के पुत्र और अङ्गिरा के पौत्र थ। इन्होने अपने मानसिक बल से इन्द्र के घोडे को पदा किया था। सूक्त ११० की ३ री और ४ थी ऋचाओं स ज्ञात होता है कि इस सूक्त क कर्ता ऋभुगण कुत्स के जाति भ्राता थे और इन्होने अपन कर्मों द्वारा देवत्व प्राप्त कर लिया था।)

२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र म ऋभुओ का अपने माता पिता को फिर से जवान बनाना और ६ ठे मन्त्र म ऋभुओ का त्वष्टा के नये चमस के ४ टुकड करना लिखा है।

त्वष्टा (विश्वकर्मा) ऋभुगण का शिष्य और अश्विनी कुमारो का नाना था। त्वष्टा की कन्या सरण्यू ने घोडी का रूप धर इन (कुमारो) को जन्म दिया था।)

२१ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र म रक्ष या राक्षसो का उल्लेख है और इन्द्र और अग्नि स उनका दुष्टता-शून्य और नि सन्तान करने की प्रार्थना है।

२२ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र मे सूय का आह्वान है। १४ वें मन्त्र म गन्धर्वों का निवास अन्तरिक्ष में कहा है। १६ व से २३ वें तक के मन्त्रों में विष्णु का (वामन रूप से) तीन परों स सारे जगत् को व्याप्त करना प्रकट किया है।

(इसके बाद के २४ से ३० वें सूक्त तक के वक्ता शुन शेप है।)

(ऐतरेय ब्राह्मण म लिखा है कि राजा हरिश्चन्द्र ने जब अपने पुत्र रोहित के स्थान पर शुन शेप को वरुण के लिय बलि देने का प्रबन्ध किया तब उसन विश्वामित्र की सम्मति स उपयुक्त ७ सूक्तों द्वारा देवताओं की स्तुति कर छुटकारा पाया था।)

२४ वें सूक्त के १० वें मन्त्र म जो ऋक्षा शब्द आया है सायण न उसका अर्थ सप्तर्षि-नक्षत्र (Great bear) किया है। इस सूक्त का १४ वां मन्त्र यह है —

अव ते हेळो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भि ।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनासि शिश्रथ कृतानि ॥१४॥

अर्थ—हे वरुण ! नमस्कार द्वारा और यज्ञ में हव्य प्रदान करके भी हम तुम्हारे क्रोध को दूर करते हैं। हे असुर ! प्रचेत ! राजन् ! हमारे लिये यज्ञ में निवास करके हमारे लिये पापों को शिथिल करो।

(इसमें प्रयुक्त असुर शब्द से प्रकट होता है कि पहले आर्य लोग देवताओं के लिए भी असुर शब्द का प्रयोग करते थे।)

इसी प्रकार ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के ५३ वें सूक्त की १ ली ऋचा में भी—

'तद्देवस्य सवितुर्वार्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः ।

अर्थ—हम असुर (बलवान्) और प्रेरक सविता देवता के उस वरणीय धन की प्रार्थना करते हैं।

इसमें भी असुर शब्द सविता देवता के विशेषण के रूप में आया है। परन्तु इसी वेद में इस (असुर) शब्द का प्रयोग शत्रु और दुष्ट के अर्थ में भी मिलता है।

(किंवदन्ती है कि आर्यों का एक दल जो रुष्ट होकर ईरान या फ़ारस की तरफ चला गया था बराबर असुर (अहुर) पूजक बना रहा और देवों से द्वेष करने लगा। परन्तु दूसरा दल जो भारत में रहा असुर-द्वेष्टा और देव पूजक बन गया। इसी प्रथम मण्डल के ३२ वें सूक्त की १२ वीं ऋचा में देव शब्द वृत्र के लिये प्रयुक्त हुआ है जो असुर माना जाता है।)

२५ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में पक्षियों के आकाश मार्ग और नौकाओं के समुद्र मार्ग का उल्लेख है तथा ८ वें मन्त्र से ज्ञात होता है कि आर्य लोग ऋग्वेद काल में भी सौर और चान्द्र वर्षों का अन्तर और उसको दूर करने के लिये अधिक मास का उपयोग जानते थे। १३ वें मन्त्र में गुवण (ऊनी) के वस्त्रों या कवच का उल्लेख है।

२८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र से प्रकट होता है कि सोम को ओखली में कूटकर उसका रस निकाला जाता था और ६ ठे मन्त्र में ओखली का काष्ठ की होना लिखा है।

३० वें सूक्त की २० वीं ऋचा में उषा का उल्लेख है।

(पीछे लोग इसे ही इआस के नाम से पुकारते हैं।)

३१ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अग्नि का मनु की स्वर्गयात्रा की कथा सुनाने का उल्लेख है। ११ वें में पुरूरवा के पुत्र नहुष का नाम आया है और १५ वें

मन्त्र मे वर्मवस्यूत से सिलाई किये हुए कवच का और जीवयाज यजते से पशु बलि वाले यज्ञ का उल्लेख है।

३२ वें सूक्त की २ री ऋचा म विश्वकर्मा द्वारा इन्द्र के वज्र का निर्माण करना लिखा है और इसके आगे इन्द्र के और वृत्रासुर के युद्ध का वर्णन है और १२ वी ऋचा मे देव शब्द वृत्रासुर के विशेषण के रूप म प्रयुक्त हुआ है।

३४ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र मे (और ४५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र म तथा तृतीय मण्डल के ६ ठे सूक्त क ९ वें मन्त्र म) ३३ देवताओ का उल्लेख है।

३५ वें सूक्त म सूर्य के कार्यों का उल्लेख और उसकी स्तुति है तथा यम के घर को जाने वाले मार्ग का उल्लेख है।

३६ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र म होत्राभि (होताओ द्वारा) लिखा है।

(ये सात माने जाते है—१ यजमान (यज्ञ करने वाला) २ होता (मन्त्र पाठी) ३ उद्गाता (मन्त्र गायक) ४ पोता (हव्य तयार करने वाला) ५ नेष्टा (अग्नि म हव्य डालने वाला) ६ ब्रह्मा (सब पदार्थों का निश्चायक) ७ रक्षक (द्वार रक्षक।)

४१ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र म यद्यपि स्पष्ट तौर स जूए का उल्लेख नही है। परन्तु भाष्यकार इससे इसी का तात्पर्य लेते है।

४४ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र म प्रस्कण्व की आयु-वृद्धि की प्रार्थना है।

४७ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र म (पिजवन-पुत्र) सुदास का उल्लेख है।

ऋग्वेद के ७ वें मण्डल के १८ वें सूक्त के २५ वें मन्त्र म सुदास के पिता का नाम पिजवन या दिवोदास लिखा है। यही सुदास ऋग्वेद के १० वें मण्डल के १३३ वें सूक्त का कर्ता था।)

५ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र म सूर्य के ७ घोडो का उल्लेख है। ११ स १३ तक क मन्त्रो म सूर्य से रोग निवृत्ति की प्रार्थना की गई है।

(इन मन्त्रो का जप करने से ही प्रसकण्व ऋषि का चर्म रोग दूर हुआ था।)

५१ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र म इन्द्र का अङ्गिरा अत्रि और विमद ऋषियो की सहायता करना कहा है। ११६ सूक्त क पहले मन्त्र म लिखा है कि अश्विनी-कुमारो ने विमद की स्त्री को रथ पर बिठा कर उसके पास पहुँचा दिया था।

इसी सूक्त के १२ वें मन्त्र में इन्द्र से ययाति राजा के यज्ञ में सोम-पान करने की प्रार्थना की गई है। १३ वें में इन्द्र का राजा वध्र्यश्वान् को वृचया नाम की युवति स्त्री प्रदान करने का और इन्द्र का वृषणश्व के यहाँ मना नाम से उसकी पुत्री होने का उल्लेख है।

५२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र द्वारा वृत्रवध का उल्लेख है। इसी के ५ वें मन्त्र में त्रित द्वारा परिधि के भेदन और इन्द्र द्वारा बल नामक असुर के भेद का उल्लेख है।

(सायण ने तैत्तिरीय संहिता के आधार पर लिखा है कि अग्नि का पुत्र त्रित जल पीने का जल पर कुएँ में गिर गया था और असुरों ने उस पर ढक्कन लगा दिया था। परन्तु त्रित उसे भेद कर बाहर आ गया।)

५३ वें सूक्त के ७ से १० तक के मन्त्रों में इन्द्र का नमी की सहायता से नमुचि का मारना अतिथिग्व राजा के लिये करञ्ज और पणय नामक असुरों का वध करना तथा राजा ऋजाश्व द्वारा घेरे हुए वंगृद नामक असुर के १०० नगरों का भेदना और सुश्रवा पर चढ़ आने वाले २० नरेशों और उनके ६००९९ सैनिकों को हराना राजा तूर्वयाण की रक्षा करना तथा कुत्स अतिथिग्व और आयु राजा को सुश्रवा के अधीन करना लिखा है। (सायण ने तूर्वयाण को दिवोदास का ही नाम माना है और पुराणों में आयु को पुरूरवा का पुत्र लिखा है।)

५४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र के तृतीय पाद [बृहच्छवा असुरो बर्हणा कृत] में असुर शब्द इन्द्र का विशेषण है और इसका अर्थ बलवान् मिलता है।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में यह शब्द ७ बार आया है। यथा—

(२४ वें सूक्त की १४ वीं ऋचा में यह शब्द वरुण के लिये प्रयुक्त हुआ है। ३५ वें सूक्त की ७ वीं ऋचा में सूर्य किरणों के लिये आया है। इसी सूक्त की १० वीं ऋचा में सविता के वास्ते है। ५८ वें सूक्त की ३ री ऋचा में इन्द्र के लिये है। ६४ वें सूक्त की २ री ऋचा में मरुतों के हेतु है। १०८ वें सूक्त की ६ ठी ऋचा में ऋत्विजों के लिए है। तथा ११० वें सूक्त की ३ री ऋचा में स्वप्न के लिए दिया है।)

५४ वें सूक्त की ६ ठी ऋचा में वृत्रवध के समय मरुद्गण का इन्द्र का प्रसन्न करना लिखा है।

५६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अयस् शब्द है। इससे उस समय लोहे के कवच के व्यवहार का होना प्रकट होता है।

५९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र से वृत्र और शम्बर के वध म अग्नि का भी इन्द्र को सहायता देना प्रकट होता है। ७ वें मन्त्र मे शतवनि पुत्र पुरुणीय राजा का उल्लख है।

६१ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र मे इन्द्र द्वारा सुर्वीति ऋषि के लिए निवास स्थान बनाने का उल्लख है। इसी सूक्त के १२ वें मन्त्र के उत्तरार्ध गोन पव विरदा तिरश्च' का अर्थ सायण ने इस प्रकार किया है —पशु की तरह वृत्र क शरार की हड्डियाँ टढ़े वज्र स काटा (यहाँ पर कुछ लाग 'गो' से गाय का अर्थ लेते हैं।)

१४ वें मन्त्र मे पवतों का इन्द्र के डर से निश्चल होना लिखा है। १५ वें मन्त्र म इन्द्र का सुवश्य के पुत्र सूय के साथ के युद्ध के समय एतश की रक्षा करना कहा है।

६२ वें सूक्त के २ रे और ३ रे मन्त्र स इन्द्र और अङ्गिरा लोगों का सरमा नाम की कुतिया की सहायता से पणियो द्वारा चुराई गायों के पता लगाने का उल्लख है।

६३ वें सूक्त क २ रे मन्त्र म इन्द्र का तरुण कुत्स की सहायता कर शुष्ण नामक असुर को मारना कहा है।

६६ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र मे अग्नि को कयाओ का जार कहा ह।

७१ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र म सप्त यह्वी' सात नदियो का उल्लख है।

(परन्तु इनके नाम कही पर भी नही दिय हैं। हाँ १० वें मण्डल के ७५ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र मे (१) गङ्गा (२) यमुना (३) सरस्वती (४) शतद्रु (सतलज) (५) परुष्णी (रावी), (६) असिक्नी (चिनाब) (७) मरुद्वृधा (संभवत चिनाब की पश्चिमी मरुवर्दवन नाम की सहायक नदी) (८) वितस्ता (झलम) (९) सुषोमा (सोहान) और (१०) आर्जीकीया (व्यास) इस प्रकार १० नदियों की स्तुति की गई है।

यास्क परुष्णी स इरावती का सुषोमा स सिन्ध का और आर्जीकीया से विपाशा का अर्थ करते हैं।

७२ वें सूक्त क ४ थे मन्त्र मे रुद्र शब्द अग्नि के लिय प्रयुक्त हुआ है।

(सायण ने इस पर अपने भाष्य म तैत्तिरीय सहिता से यह कथा उद्धृत की है—देवो और असुरो के युद्ध के समय अग्नि देवो की सपत्ति लकर भाग

गए। इसके बाद जब देवों ने उस सम्पत्ति को अग्नि से जबरदस्ती छीन लिया तब अग्नि रोने लगे। इसी से अग्नि का एक नाम रुद्र हो गया।)

इसी सूक्त के ६ ठे मन्त्र में २१ यज्ञों का उल्लेख है।

(सायण ने उनके नाम इस प्रकार दिये हैं —विश्वेदेव सम्बन्धी ७ यज्ञ अग्न्याधेय यज्ञ—पौर्णमास आदि ७ हविर्यज्ञ अग्निष्टोम ७ अग्निष्टोम आदि ७ सोम यज्ञ।)

७६ वें सूक्त के पहले ३ मन्त्रों में विद्युद् रूप अग्नि का वर्णन है।

८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में ध्यान द्वारा सोम को लाना लिखा है।

(इसका उल्लेख ३ रे ४थे और ८वें मण्डलों में भी है। एतरेय ब्राह्मण की एक कथा में गायत्री का ध्येन रूप धारण करना प्रकट होता है।)

१६वें मन्त्र में अथर्वा मनु और अथर्वा के पुत्र दध्यङ के यज्ञों का उल्लेख है।

८४ वें सूक्त के १३ वें मन्त्र से प्रकट होता है कि इन्द्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों से वृत्र आदि ९०×९=८१० असुरों को मारा था। इसी सूक्त के १५ वें मन्त्र में लिखा है कि इस चलने रहने वाले चन्द्र में अन्तर्हित जो सूर्य तत्व है वह सूर्य का ही एक किरण है।

(इससे प्रकट होता है कि उस काल में भी आर्यों को यह बात ज्ञात थी।)

८५ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में मरते मारे हुए को ऊँचा उठाने का उल्लेख है।

(इसी प्रकार ११६ वें सूक्त के ६वें मन्त्र में नासत्यद्वय (अश्विनी कुमारों) का गौतम ऋषि के पास मरुभूमि में कुआँ उठा लाने और गौतम का प्यास बुझाने के लिए उसे उलटकर उसका पानी बहाने का उल्लेख है।)

८६ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र में मनुष्यों की १० वर्ष की आयु होना लिखा है।

(सायणाचार्य ने इसके पश्चात के मन्त्र में कहीं आयु पर टीका करते हुए मनुष्यों की आयु ११६ या १२० वर्ष मानी है।)

इसी सूक्त के १० वें मन्त्र में जो 'पञ्चजना' शब्द है सायण ने उसके दो

अर्थ किये हैं —एक गन्धर्व पितर देव असुर और राक्षस। दूसरा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और निषाद।

(७ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र के पञ्चक्षिति और १०० वें सूक्त के १२ वें मन्त्र के 'पाञ्चजन्य' शब्द का भी यही तात्पर्य माना है।)

९३ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में वृसय का उल्लेख है।
(कुछ लोग इस ही इलियड का ब्रिसस (*Brises*) मानते हैं।)

१०१ वें सूक्त की १ ली ऋचा में इन्द्र का ऋजिश्वा राजा के साथ मिल कर कृष्ण नामक असुर की गर्भवती स्त्रियों का मारना लिखा है २ री ऋचा में इन्द्र की भुजा-हीन वृत्र या व्यंस शम्बर, पिप्रु और शुष्ण का मारने का उल्लेख है और ३ री ऋचा में इन्द्र का पणियों द्वारा चुराई गई अङ्गिरा, आदि की गायों का पता लगाना और म्यृग्रा का वध करना प्रकट किया है।

१०३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का वृत्र (व्यंस) अहि और रौहिण नामक असुरों को मारना कहा है।

१०४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कुयव नामक असुर उसकी दो स्त्रियों और शिफा नाम की नदी का उल्लेख है।

१०५ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में वृक का उल्लेख है।

(सायणाचार्य ने इसकी कथा इस प्रकार लिखी है —मित ऋषि के कुएँ में गिरने के पूर्व उन्हें खाने के लिए एक भेड़िया नदी पार करने गया। परन्तु वह सूर्य की किरणों को देखकर अपने भोजन के समय का न होना समझ वापस लौट गया।)

१०८ वें सूक्त का ९ वां और १० वां मन्त्र करीब-करीब एक ही है। केवल पूर्वार्ध में दो शब्दों में भिन्नता है।

११० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मन्त्र-कर्ता अङ्गिरा का पुत्र कुत्स ऋभुगणों को अपने जाति भ्राता कहता है।

(यह ऋभुगण सुधन्वा नामक अङ्गिरा के पुत्र हैं। अतः कुत्स और ऋभुगण दोनों ही अङ्गिरा वंश के होने से एक ही वंश के हैं।)

इसी सूक्त के ८ वें मन्त्र में सुधन्वा के पुत्र ऋभुगणों का मरी हुई गौ के चर्म से आच्छादित कर एक नई गाय बनाने उस मृत गाय के बछड़े से मिलाने और वृद्ध माता पिता को फिर से युवा करने का उल्लेख है। (इसी मण्डल

गये। इसके बाद जब देवों ने उस संपत्ति को अग्नि से जबरदस्ती छीन लिया तब अग्नि रोने लगे। इसी से अग्नि का एक नाम रुद्र हो गया।)

इसी सूक्त के ६ ठे मन्त्र में २१ यज्ञों का उल्लेख है।

(सायण ने उनके नाम इस प्रकार दिये हैं —विश्वेदेव सम्बन्धी ७ पाक यज्ञ अग्न्याधेय दर्श—पौर्ण मास आदि ७ हविर्यज्ञ अग्निष्टोम अति अग्निष्टोम आदि ७ सोम यज्ञ।)

७९ वें सूक्त के पहले ३ मन्त्रों में विद्युद् रूप अग्नि का वर्णन है।

८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में श्येन द्वारा सोम का लाना लिखा है।

(इसका उल्लेख ३रे ४थे और ८वें मण्डलों में भी है। ऐतरेय ब्राह्मण की एक कथा से गायत्री का श्येन रूप धारण करना प्रकट होता है।)

१६वें मन्त्र में अथर्वा मनु और अथर्वा के पुत्र दध्यङ् के यज्ञों का उल्लेख है।

८४ वे सूक्त के १३ वें मन्त्र में प्रकट होता है कि इन्द्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों से वृत्र आदि ९०×९=८१० असुरों को मारा था। इसी सूक्त के १५ वें मन्त्र में लिखा है कि इस चलते रहने वाले चन्द्र में अन्तर्हित जो सूर्य तेज है वह सूर्य की ही एक किरण है।

(इसी से प्रकट होता है कि उस काल में भी आर्यों को यह बात ज्ञात थी।)

८५ वे सूक्त के १ वें मन्त्र में मरुतों द्वारा कुएं को ऊँचा उठाने का उल्लेख है।

(इसी प्रकार ११६ वे सूक्त के ९वें मन्त्र में नासत्यद्वय (अश्विनी कुमारों) का गौतम ऋषि के पास मरुभूमि में कुआं उठा लाने और गौतम की प्यास बुझाने के लिए उसे उलटकर उसका पानी बहाने का उल्लेख है।)

८९ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में मनुष्यों की १० वर्ष की आयु होना लिखा है।

(सायणाचार्य ने इससे पूर्व के मन्त्र में कही आयु पर टीका करते हुए मनुष्यों की आयु ११६ या १२० वर्ष मानी है।)

इसी सूक्त के १ वें मन्त्र में जो पञ्चजना शब्द है सायण ने उसके दो

अर्थ किये है—एक गन्धर्व पितर देव, असुर और राक्षस। दूसरा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और निषाद।

(७ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र के पञ्चक्षिति और १०० वें सूक्त के १२ व मन्त्र के पाञ्चजन्य शब्द का भी यही तात्पर्य माना है।)

९३ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में वृसय का उल्लेख है।
(कुछ लोग इसे ही इलियड का त्रिसेस (Br. es) मानते है।)

१०१ वें सूक्त की १ ली ऋचा में इन्द्र का ऋजिश्वा राजा के साथ मिल कर, कण्व नामक असुर की गर्भवती स्त्रियों को मारना लिखा है २ री ऋचा में इन्द्र की भुजा-हीन वृत्र या व्यंस शम्बर, पिप्रु और शुष्ण को मारने का उल्लेख है और ३ री ऋचा में इन्द्र का पणियों द्वारा चुराई गई अङ्गिरा आदि की गायों का पता लगाना और दस्युओं को वध करना प्रकट किया है।

१०३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का वृत्र (व्यंस) अहि और रौहिण नामक असुरों को मारना कहा है।

१०४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में कुयव नामक असुर उसकी दो स्त्रियां और शिफा नाम की नदी का उल्लेख है।

१०५ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में वृक का उल्लेख है।
(सायणाचार्य ने इसकी कथा इस प्रकार लिखी है—त्रित ऋषि के कुए में गिरने के पूर्व उन्हें खाने के लिए एक भेड़िया नदी पार करने गया। परन्तु वह सूर्य की किरणों को देखकर अपने भोजन के समय का न होना समझ वापस लौट गया।)

१०८ वें सूक्त की ९ वीं और १० वीं मन्त्र करीब-करीब एक ही है। केवल पूर्वार्ध में दो शब्दों में भिन्नता है।

११० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मन्त्र-कर्ता अङ्गिरा का पुत्र कुत्स ऋभुगणों को अपने जाति भ्राता कहता है।

(यह ऋभुगण सुधन्वा नामक अङ्गिरा के पुत्र है। अतः कुत्स और ऋभुगण दोनों ही अङ्गिरा वंश के होने से एक ही वंश के हैं।)

इसी सूक्त के ८ वें मन्त्र में सुधन्वा के पुत्र ऋभुगणों का मरी हुई गौ के चर्म से आच्छादित कर एक नई गाय बनाने उस मृत गाय के बछड़े से मिलाने और वृद्ध माता पिता को फिर से युवा करने का उल्लेख है। (इसी मण्डल

के २० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में भी ऋभुगणों का अपने माता पिता को युवा करना लिखा है।)

(९४ वें सूक्त के पहले १४ मन्त्रों का चतुर्थ पाद एक ही है। इसी प्रकार ९६ वें सूक्त के पहले ६ मन्त्रों का १०० वें सूक्त के पहले १५ मन्त्रों का १०१ वें सूक्त के पहले ७ मन्त्रों का १०५ वें सूक्त के पहले १८ मन्त्रों का चतुर्थ पाद अपने-अपने सूक्तानुसार समान है तथा ९४ वें से ९६ वें और ९८ वें १०० वें से १०३ वें और १०५ वें तथा ११८ वें सूक्त के अन्तिम मन्त्रों का उत्तरार्ध एक समान ही है।)

(९९ वां सूक्त १ मन्त्र का ही है।)

१११ वें सूक्त के ५वें मन्त्र में समर-विजयी वाज का उल्लेख है।

११२ वें सूक्त में अश्विनी कुमारों का अनेक जनों की सहायता करना लिखा है।

(इन सहायता पाने वालों में—रेभ वन्दन कण्व अन्तक (तुग्र-पुत्र) भुज्यु कक्षीवान् वध्र्य श्रुष्टि अत्रि पृश्निगु पुरुकुत्स परावृज ऋजाश्व श्याव वर्तिका वसिष्ठ श्रुतर्य नय (तेल-पत्नी) लंगडी विश्पला (अश्व पुत्र) वन (दीर्घतमा की स्त्री) उशिज का पुत्र दीर्घश्रवा (उशिज-पुत्र) कक्षीवान् (कण्व-पुत्र) त्रिशोक माधाता भरद्वाज त्रिशोक (पुरु कुत्स पुत्र) त्रसदस्यु (विरूपन-पुत्र) वज्र कलि पृथि (वन) शयु मनु स्यूमरश्मि पठर्वा शर्यात शूर विमद (पिजवन-पुत्र सुदास अधिगु ऋतस्तुभ कृशानु, (इन्द्र-पुत्र) कुत्स सुर्वीति दधीति ध्वसन्ति पुरुषन्ति थ।)

(इस सूक्त के पहले २३ मन्त्रों का चतुर्थ पाद एक ही है)

११६ वें सूक्त के १ से मन्त्र में अश्विनों की कृपा से विमद का स्वयंवर में स्त्री प्राप्त करना लिखा है।

२ रे मन्त्र में इनके रथ के वाहक गर्दभ का उल्लेख है।

३ रे मन्त्र में तुग्र राजा का बड़े कष्ट से अपने पुत्र भुज्यु को सेना देकर नौका द्वारा समुद्र (स्वितद्वीप) में रहने वाले शत्रु को जीतने के लिए भेजना और उस (भुज्यु) के समुद्र में डूबने पर अश्विनीकुमारों का उसे नाव द्वारा तुग्र के पास पहुँचाना लिखा है।

८ वें मन्त्र में यन्त्र-गृह में फँसे अत्रि के उद्धार का उल्लेख है। ९ वें मन्त्र में अश्विन्य का मरु-भूमि में कुआँ खोदकर गौतम की प्यास बुझाना कहा है। १० वें में इनका च्यवन ऋषि के बुढ़ापे को दूर करना कहा है।

१२ वें मन्त्र म दधीचि का घोड का मस्तक पहन कर, अश्विद्वय को मधु विद्या सिखाना लिखा है।

(सायणाचार्य न लिखा है कि इन्द्र ने अथर्वा के पुत्र दधीचि को मधु विद्या सिखला कर कह दिया था कि यदि किसी दूसरे को यह विद्या सिखाई तो तुम्हारा मस्तक काट लूँगा। अश्विनीकुमारो न मधु विद्या सीखने की इच्छा स दधीचि का सिर काट कर उसके स्थान पर घोडे का सिर लगा दिया और उस मुख के द्वारा मधु विद्या सीखली। इस पर जब इन्द्र ने पहले कहे अनुसार वह घोडे का मस्तक काट डाला तब अश्विनीकुमारो ने दधीचि का पहला मस्तक लाकर फिर से उसकी धड पर लगा दिया। अन्त म इन्द्र ने उसी घोड के सिर की हड्डी से वज्र बनवाकर वृत्रादि असुरों का मारा। पुराणों स इस कथा म कुछ भद प्रतीत होता है।)

१३ वें मन्त्र से प्रकट होता है कि अश्विनीकुमारो न ऋषि-कन्या वध्रिमती क स्तोत्र द्वारा पुकारने पर पुत्र की कामना करन वाली उस नपुसक-पतिका को हिरण्यहस्त नामक पुत्र दिया था।

१५ वें म इनक खल नरेश की स्त्री विश्पला का पर कट जान पर उस लोहे की जाघ देने का उल्लख है।

(इसी सूक्त की १६ वी ऋचा और सूक्त ११७ वें की १७ वी ऋचा के शब्दो म तो भिन्नता है परन्तु भावाथ एक हा निकलता है कि—ऋजाश्व ऋषि न मादा भेडिय क खान के लिए जब १०० भडो को मार डाला तब उसक पिता न नाराज होकर उस अन्धा कर दिया। परन्तु अश्विनीकुमारा न उस फिर स दृष्टि शक्ति दा।

१७ वें मन्त्र म अश्विनीकुमारा का घुड़दौड जीतकर सूय-कन्या सूर्या का प्राप्त करना लिखा है।

(कहा जाता है कि सूर्या राजा सोम को दी जान वाला थी। परन्तु उसे पान की सारे ही देवो ने इच्छा की। इससे उसको प्राप्त करन के लिए घुड दौड जीतन की शत रक्खी गई।)

२२ वी ऋचा म अश्विनो का ऋषभक के पुत्र वर और श्यावश्वयु की सहायता करना लिखा है।

(परन्तु कुछ विद्वान् इन अश्विद्वय को द्यावा पृथिवी कुछ दिवा रात्रि कुछ सूय चन्द्र और कुछ धार्मिक नरेश मानते हैं।)

११७ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अश्विद्वय का कृष्ण के पुत्र विश्वकाय के स्तुति करने पर उसके पुत्र विष्णापु का लाना और कोढ़ के कारण वृद्धावस्था तक अविवाहित रहने वाली घोषा को नीरोग कर पति प्रदान करना कहा है। ८ वें मन्त्र में अश्विनीकुमारों का न्याव के कोढ़ को दूर कर सुन्दर स्त्री देना कवि के अन्धेपन को दूर करना और नपद-पुत्र का बहरापन मिटाना सूचित किया है।

इसके १६ वें मन्त्र में अश्विद्वय का भेड़िये के मुख से वर्तिका पक्षी को छुड़ाना जाहुष को लेकर पर्वत पर जाना और विश्वाङ्ग असुर के पुत्र को विषाक्त तीर से मारना लिखा है। २४ वें मन्त्र में इनका वध्रिमती को हिरण्य हस्त नामक पुत्र देना और तीन टुकड़ों में विभक्त श्याव ऋषि को जीवित करना बतलाया है।

११९ वें सूक्त में अश्विन्य का भुज्यु को समुद्र से निकाल कर उसके पिता के पास पहुँचाना दिवोदास की रक्षा करना सूर्या को पत्नी रूप में पाना रेभ और अत्रि की रक्षा करना वन्दन को युवा और दीर्घायु करना वामदेव को गर्भ में निकालना दधीचि के मन को तृप्त करना और पेदु को घोड़ा देना लिखा है। इसी के ९ वें मन्त्र में उशिज-पुत्र कक्षीवान् का उन्हें सोमपान के लिये बुलाना प्रकट होता है।

१२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में कहा है कि हे अश्विन्य! घोषा-पुत्र सुहस्ति और भृगु ने तुम्हारी जो स्तुति की थी वही स्तुति मैं पञ्च-वंशी कक्षीवान् भी करता हूँ। ६ठे मन्त्र में अन्धे ऋजाश्व का इनकी स्तुति करने नेत्र पाना वर्णित है।

१२१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का घोड़ी को गौ की माता करना अर्थात् घोड़ी से गाय पैदा करना लिखा है।

(द्वितीय अष्टक)

१२२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में असुर शब्द इन्द्र के लिए प्रयुक्त किया गया है।

(इस अष्टक में इस (असुर) शब्द का प्रयोग १० बार हुआ है।)

इसके ५ वें मन्त्र में उशिज-पुत्र कक्षीवान् द्वारा की गई अश्विद्वय की स्तुति है। इसी में घोषा का अपने श्वेत-कुष्ठ नाश के लिए अश्विनी कुमारों की स्तुति करना भी कहा है। ८ वां मन्त्र इस प्रकार है —

अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः सचा सनेम नहुषः सुवीराः ।
जनो यः पञ्चभ्या वाजिनीवानस्वावतो रथिनो मह्य सूरिः ॥८॥

अर्थ—मैं धनवाले देवों के धन की स्तुति करता हूँ। हम मनुष्य हैं इसलिए रण में शोभा पाने वाले पुत्र पौत्रादि से युक्त होकर इस धन का उपभोग करें। जो देव अङ्गिरा गोत्री कक्षीवान् को अन्न घोड़े और रथ देते हैं उन्हीं की मैं स्तुति करता हूँ।

इसी सूक्त के १३ वें मन्त्र में इष्टाश्व और इष्टरश्मि (राजाओं) का उल्लेख है।

(कुछ विद्वान इष्टाश्व को ही जन्द (पारसी) धर्म का प्रचारक गुष्टास्प मानते हैं।)

१५ वें मन्त्र में कक्षीवान् द्वारा मशर्शार के चार पुत्रों और आयवस के तीन पुत्रों की शिकायत की गई है।

१२३ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अहना (उषा) का उल्लेख है।
(कुछ लोग इसे ही ग्रीक की 'ऐथेना' देवी मानते हैं।)
८ वें मन्त्र में उषा का सूर्य से ३० योजन आगे रहना लिखा है।

(सायणाचार्य के मतानुसार सूर्योदय से करीब आधे दण्ड पहले उषा का उदय होता है।)

१२५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कक्षीवान् का स्वनय द्वारा प्रस्तुत किये रत्न का ग्रहण करना प्रकट किया है।

(सायण ने लिखा है—कक्षीवान् अपना अध्ययन समाप्त कर घर लौटते हुए मार्ग में सो गया। इतने में स्वनय राजा उधर आ निकला और कक्षीवान् के रूप को देखकर उसे अपने घर ले आया तथा उसके साथ अपनी दस कन्याओं का विवाह कर दिया। इसके साथ ही दहेज में १०० निष्क सुवर्ण १०० घोड़े १०० बैल १०६० गायें और ११ रथ दिये। कक्षीवान् ने इन सबको लेकर अपने पिता दीर्घतमा को दे दिया।)

१२६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कक्षीवान् द्वारा भावयव्य के पुत्र स्वनय के लिए अनेक स्तोत्र बनाने का उल्लेख है। २ रे मन्त्र में कक्षीवान् को १०० निष्क १ ० घोड़े और १०० बैल प्राप्त करना लिखा है। ३ रे में स्वनय को कक्षीवान् के लिए भूरे रंग के घोड़ों वाले दस रथ, जिन पर वधुएँ बैठी थीं

और १०६० गायें भेजना और कसीवान् का उन्हें लेकर अपने पिता को देना कहा है।

४ ये मन्त्र में हजार गायों के आगे दस रथों के ४० सुरंग घोड़ों का पंक्तिबद्ध होकर चलना और कसीवान् के नौकरों का उनके लिए घास का प्रबन्ध कर उनकी मालिश करना लिखा है।

(इससे प्रत्येक रथ में ४ घोड़ों के जोड़ने का रिवाज प्रकट होता है।)

६ ठे मन्त्र में स्वनय द्वारा एक रमणी (सामना) का आलिङ्गन करना और उसका नकुली के समान चिरकाल तक रमण करना प्रकट किया है तथा उसका उस (स्वनय) को बहुत बार भोग प्रदान करना भी कहा है।

७ वें में उक्त रमणी द्वारा स्वनय का सम्भोग के लिए आह्वान है। वह रमणी अपना कंधार की भेड़ की तरह रोम वाली और पूर्णवया होना भी प्रकट करती है।

१२७ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अरणि मन्थन द्वारा अग्नि का उत्पन्न किया जाना दर्शाया है।

१२९ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में शम्बर के विनाश के लिए इन्द्र का पैदा किया जाना कहा गया है।

१३ वें सूक्त की ७ वीं ऋचा में इन्द्र का दिवोदास के लिए (शम्बर के) ९० नगरों का नाश करना और शम्बर को पर्वत से गिराना लिखा है। ८ वीं में इन्द्र का (अश्मुमती नदी के तीर पर) कृष्ण नामक असुर की काली चमड़ी उधेड़ कर उसे मारना कहा है।

१३१ वें सूक्त की ८ वीं ऋचा में स्त्री-पुरुषों का साथ-साथ यज्ञ कर स्वर्ग गमन की कामना करना बतलाया है।

१३३ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में रक्त वर्ण पिशाचों और राक्षसों का उल्लेख है।

१३४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में वायु को यजमान को उसी प्रकार जगाना कहा है जिस प्रकार लिप्सित स्त्री को उसका जार जगा देता है।

१३८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में पूषा देवता से प्रार्थना की गई है कि वह प्रार्थी को ऊँट की तरह युद्ध में पार लगावे।

(इससे उस समय ऊँट का भी युद्ध में प्रयोग होना प्रकट होता है।)

४ ये मन्त्र में बकरे को पूषा (सूर्य) का वाहन कहा है।

१३९ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में दधीचि अङ्गिरा प्रियमेध कण्व अत्रि और मनु को दीर्घजीवी कहा है और अपने जीवन के साथ उनका सम्बन्ध प्रकट कर उन्हें नमस्कार किया है। ११ वें मन्त्र में ११ स्वर्ग के ११ पृथ्वी के और ११ अन्तरिक्ष के इस प्रकार कुल ३३ देवों का उल्लेख है।

१४० वें सूक्त के ३ से ५ तक के मन्त्रों और ९ वें मन्त्र में २ काष्ठों से अग्नि का उत्पन्न होना प्रज्वलित होना स्फुलिङ्ग उड़ाना और मार्गों को जला कर काला करना वर्णित है।

१४७ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अग्नि का ममता के पुत्र दीर्घतमा का अन्धापन दूर करना प्रकट किया है।

(सायण ने लिखा है कि जिस समय दीर्घतमा गर्भ में था उस समय उसकी माता (उचथ्य की स्त्री) ममता से (उसके देवर) बृहस्पति ने संभोग किया था। परन्तु उस समय वर्णसंकरता के भय से दीर्घतमा ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। इससे क्रुद्ध होकर बृहस्पति ने उसे शाप द्वारा अन्धा कर दिया। इसके बाद दीर्घतमा ने अग्नि की स्तुति कर अपना अन्धापन दूर करवाया।)

१५३ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में मित्रावरुण की कृपा से रातहव्य (राजा) की गायों का दुधारू होना लिखा है।

१५४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में विष्णु के वामनावतार के कार्यों का उल्लेख है।

१५५ वें सूक्त के ६ठे मन्त्र में ९४ कलाओं का उल्लेख है।

(वे ये हैं —संवत्सर १ अयन २ ऋतु ५ (इनमें हेमन्त और शिशिर एक में ही ग्रहण किये गये हैं।) मास १२ पक्ष २४ अहोरात्र ३० प्रहर ८ और रात्रियाँ[1] १२। कुछ विद्वान 'चतुर्भि साकं नवतिं' का अर्थ (९०×४)= ३६० कर के उनसे संवत्सर के दिनों का आशय लेते हैं।)

१५७ वें सूक्त के ६ठे मन्त्र में अश्विनी कुमारों का वध होना कहा है।

१५८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में तुग्र के पुत्र भुज्यु की समुद्र-यात्रा का उल्लेख है। ५ वें मन्त्र में दासों (अनार्यों) द्वारा वृद्ध दीर्घतमा को ओघा

---

१ रात्रियों का उल्लेख मानना सन्देहास्पद है।

मुड़ कर फेंकना त्रित का उसका सिर काटना और त्रास का उसके हृदय और कंधों पर चोट पहुँचाना लिखा है।

(अश्विनी कुमारों ने दीर्घतमा को इन सब घातों से बचाया था।)

१६१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सुधन्वा के पुत्र ऋभुओं का अग्नि के विषय में विचार है। (कहते हैं कि सुधन्वा के ३ पुत्रों ने अपने कर्म से देवत्व प्राप्त कर लिया था। एक बार जिस समय वे सोम-पान कर रहे थे उस समय देवों ने अग्नि को वहाँ भेज दिया। अग्नि ने जब उनके समान रूप को देखा तब वह स्वयं भी वैसा ही रूप बनाकर सोम-पान करने लगा। इस प्रकार आये समान रूप वाले चौथे व्यक्ति को देखकर ऋभु लोग उसके विषय में विचार करने लगे।)

१६२ वें सूक्त में अश्वमेध का वर्णन है।

इसमें पहले बकरों को घोड़े के पास ले जाया जाता है। इसके बाद घोड़े को ३ बार अग्नि के पास ले जाते हैं तथा उसे वृक्ष काट कर बनाये यूप (खंभे) में रस्सी से बाँध देते हैं। वे धन गले पैरों और सिर पर लगाये जाते हैं। फिर उसे घास दी जाती है। बाद में उसका वध किया जाता है। वध के बाद उसके मांस पर मक्खियाँ आ बैठती हैं। तथा कुछ मांस छुरे में और मारने वाले के हाथों और नखों में लग जाता है। उस घोड़े का पेट भी चीर दिया जाता है और फिर उसके मांस को पकाया जाता है। आग में पकाते समय उसका कुछ अंश थूक (भीस्म) में लगा रह जाता है और मांस रस भी जमीन पर गिरने लगता है। लोग चारों ओर बैठकर उस मांस को पकते देखते हैं उसकी गंध की प्रशंसा करते हैं और उसका कुछ अंश माँगना चाहते हैं। फिर पक जाने के बाद उसका रस बर्तनों में उलट कर गर्म रखने के लिये छोड़ दिया जाता है। अश्व के अङ्गों को काटते समय पहले उसे की टहनी से भिन्न-भिन्न स्थानों पर बाँध कर उन्हें छुरी से पूर्व निश्चयानुसार काटते हैं। घोड़े के बगल में चौंतीस टेढ़ी हड्डियाँ (पसलियाँ) होती हैं। वे सन्धि से काटी जाती हैं। अश्व को मारने वाला अश्व के अङ्गों को बिखरने से बचाने के लिए शब्द करता हुआ देव देखकर एक-एक हिस्सा काटता है और उन हिस्सों के पिण्ड बना कर अग्नि में होम जाते हैं। इस कार्य के लिए प्रस्तुत किये गये घोड़े की न तो मृत्यु और न हिंसा ही मानी जाती है। इस अश्व के साथ ही पूर्वोक्त बकरों का भी पुरोडाश बनाया जाता है।

१६३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में यम का उल्लेख है और १६४ वें सूक्त[1]

---

१ इस सूक्त के सारे मन्त्र अथर्ववेद में भी मिलते हैं।

के दूसरे मन्त्र में एक ही घोड़े का सात नामों से सूर्य के रथ को खींचना लिखा है।

(यह संभवतः सूर्य की श्वेत रश्मि में सात रंगों का होना प्रकट करता है।) ४ से ६ तक की ऋचाओं में संसार की उत्पत्ति के विषय में जिज्ञासा की गई है तथा आत्मा और परमात्मा पर विशेष रूप से प्रश्न है। तथा इन बातों का देवों को भी पता न होना माना है। ११ वीं ऋचा में १२ मासों ३६० दिनों और ३६० रातों का उल्लेख है। १२ वीं ऋचा में ५ ऋतुओं (हेमन्त और शिशिर को एक में मिलाकर) १२ महीनों तथा दक्षिणायन और उत्तरायण का वर्णन है। २० वीं में आलङ्कारिक भाषा में जीवात्मा और परमात्मा के विषय में संकेत हैं। ३० वीं ऋचा में जीवात्मा को अमर कहा है। ४४ वीं ऋचा में अग्नि का पृथ्वी के और कर्म को करना कहा है। ४५ वीं में ब्राह्मणों को परा पश्यन्ती मध्यमा और वैखरी ४ प्रकार की वाक् का ज्ञान होना लिखा है।

१६५ वें सूक्त में इन्द्र और मरुद्गणों का संवाद है। इसमें प्रत्येक ने एक दूसरे का और अपना महत्व बतलाया है।

१६८ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में पृश्नि द्वारा—मरुद्गणों का जन्म होना और १०वें में मरुद्गणों के लिए मान्दार्य का इस (सूक्तोक्त) स्तोत्र को बनाना लिखा है।

१७० वें सूक्त में इन्द्र और अगस्त्य का संवाद है। इसमें पहले एक दूसरे पर आक्षेप है और बाद में इन्द्र की स्तुति है।

१७३ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में उद्गाता द्वारा सामगान का उल्लेख है। और २ रे मन्त्र में स्त्री-पुरुषों (मनुष्यों) का यज्ञ करना लिखा है।

१७४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में इन्द्र के लिए असुर शब्द का प्रयोग किया गया है २ रे मन्त्र में इन्द्र का सुदृढ़ सात पुरों (नगरों) का नष्ट करना और पुरुकुत्स के लिए वृत्रासुर का वध करना लिखा है। ७ वें मन्त्र में इन्द्र का दासों को मारना और त्र्योणि राजा के लिए कुयवाच का वध करना प्रकट किया है।

१७५ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में उसका कर्ता अपने को मनुष्य बतलाकर इन्द्र की प्रार्थना करता है।

१७६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में पञ्च क्षिति शब्द आया है जिसका अर्थ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और निषाद किया गया है।

मुंह कर फेंकना त्रित का उसका सिर काटना और दास का उसके हृदय और कंधों पर चोट पहुँचाना लिखा है।

(अश्विनी कुमारों ने दीर्घतमा को इन सब घातों से बचाया था।)

१६१ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में सुधन्वा के पुत्र ऋभुओं का अग्नि के विषय में विचार है। (कहते हैं कि सुधन्वा के ३ पुत्रों ने अपने कर्म से देवत्व प्राप्त कर लिया था। एक बार जिस समय वे सोम-पान कर रहे थे उस समय देवों ने अग्नि को वहाँ भेज दिया। अग्नि ने जब उनके समान रूप को देखा तब वह स्वयं भी वैसा ही रूप बनाकर सोम-पान करने लगा। इस प्रकार आप समान रूप वाले चौथे व्यक्ति को देखकर ऋभु लोग उसके विषय में विचार करने लगे।)

१६२ वें सूक्त में अश्वमेध का वर्णन है।

इसमें पहले बकरों को घोड़े के पास ले जाया जाता है। इसके बाद घोड़े को ३ बार अग्नि के पास ले जाते हैं तथा उसे वृक्ष काट कर बनाये यूप (खंभे) में रस्सी से बांध देते हैं। बन्धन गले पैरों और सिर पर लगाये जाते हैं। फिर उसे घास दी जाती है। बाद में उसका वध किया जाता है। वध के बाद उसके मांस पर मक्खियां आ बैठती हैं। तथा कुछ मांस छुरे में और मारने वाले के हाथों और नखों में लग जाता है। उस घोड़े का पेट भी चीर दिया जाता है और फिर उसके मांस को पकाया जाता है। आग में पकाते समय उसका कुछ अंश धूल (मीन) में लगा रह जाता है और मांस रस भी जमीन पर गिरने लगता है। लोग चारों ओर बैठकर उस मांस को पकते देखते हैं उसकी गंध की प्रशंसा करते हैं और उसका कुछ अंश मांगना चाहते हैं। फिर पक जाने के बाद उसको रस बर्तनों में उलट कर गर्म रहने के लिये ढंक दिया जाता है। अश्व के अङ्गों को काटते समय पहले उसे की टहनी से भिन्न भिन्न स्थानों पर बांध कर उन्हें छुरी से पूर्व निश्चयानुसार काटते हैं। घोड़े के बगल में चौंतीस टेढ़ी हड्डियाँ (पसलियाँ) होती हैं। वे अङ्गुल से काटी जाती हैं। अश्व को मारने वाला अश्व के अङ्गों को विस्मरण न होने के लिए शब्द करता हुआ दम दमकर एक-एक हिस्सा काटता है और उन हिस्सों के पिण्ड बना कर अग्नि में होम जाते हैं। इस कार्य के लिए प्रस्तुत किये गये घोड़े का न तो मृत्यु और न हिंसा ही मानी जाती है। इस अश्व के साथ ही पूर्वोक्त बकरों का भी पुरोडाश बनाया जाता है।

१६३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में यम का उल्लेख है और १६४ वें सूक्त[1]

---

१ इस सूक्त के सारे मन्त्र अथर्ववेद में भी मिलते हैं।

११ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में इन्द्र से सोमपान कर लाल पूंछ वाले बैल सोम को भाड़ने की प्रार्थना की गई है। १९ वें मन्त्र में इन्द्र का मित्र की मित्रता के लिए त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप का वध करना लिखा है।

१२ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में इन्द्र का ४० वर्ष तक खोज कर पर्वत में छिपे शम्बरासुर का पता लगाना और मारे हुए अहि नामक दस्यु को मारना लिखा है।

१३ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में इन्द्र के पास १००० घोड़े होना और उसका दभीति ऋषि के लिए दस्युओं को मारना लिखा है।

१४ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का ९९ हाथ वाले उरण को मारना और अवद का औंधे मुंह पटक कर नष्ट करना लिखा है। ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अवद शुष्ण पिप्रु नमुचि और रुधिका को मारना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का शम्बर के नगरों को ध्वस्त करना और वर्षों के १००००० पुत्रों को मारना लिखा है। ७ वें में इन्द्र का कुत्स आयु और अतिथिग्व के शत्रुओं को मारना लिखा है।

१५ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का दभीति ऋषि की रक्षा करना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का शिंशु को उत्तर वाहिनी बनाना कहा है। ७ वें में इन्द्र का पराशुज का लंगड़ापन और अन्धापन दूर कर उसका उसके विवाहार्थ आई हुई कन्याओं के पीछे दौड़ने में समर्थ करना लिखाया है। ९ वें में इन्द्र का सोमपान कर चुमुरि और धुनि नामक असुरों को मारना और दभीति की रक्षा करना कहा है।

१७ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का घूमने वाले पर्वतों को अचल करना और ७ वें मन्त्र में आजीवन अविवाहिता कन्या का माता पिता से धन की कामना करना प्रकट किया है। ९ वें मन्त्र में [illegible] में बचने अपने को धन [illegible] और औरों को न [illegible] की प्रार्थना की गई है।

१९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र का अपने सारथि कुत्स के लिए पुरुष अनुष और द्रुह्यु को बन्द करना तथा निवास के लिए शम्बर के ९९ नगरों को नष्ट करना कहा है। ८ वें में गृत्समदों का इन्द्र की स्तुति करना और ९ वें में अन्य लोगों को दक्षिणा न देकर अपने को देने की प्रार्थना है।

२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र को अङ्गिराओं को उनकी चुराई गई गायों के प्राप्त करने का मार्ग बताना और अन्न के प्राचीन नगरों

१७९ वें सूक्त के १ से ४ तक के मन्त्रों में लोपामुद्रा और अगस्त्य का काम वासना-पूर्ण संवाद है।

१८२ वें सूक्त के ५ वें और ६ ठे मन्त्रों में अश्विनी कुमारों का द्यूत हुत लुप्त-गुप्त का नौका द्वारा बचाने का उल्लेख है।

१८ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में गौतम पुरुमीढ और अत्रि का हृष्य ग्रन्थाथ अश्विद्वय को बुलाना लिखा है।

१८५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में द्यावा-पृथिवी में पहले कौन उत्पन्न हुआ है और ये किस लिए उत्पन्न हुए हैं यह जिज्ञासा की गई है। तथा ८ व ९ में देवरों वधुओं और जामाता के प्रति किये अपराध की क्षमा प्रार्थना है।

१८७ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में जल पीने और यव खाने से शरीर में स्थिर होने की कामना की गई है।

१९१ वें सूक्त में विषधरों और उनके स्वभाव का वर्णन कर गूढ़ द्वारा उनका नाश होना प्रकट किया है।

(यहाँ पर प्रथम मण्डल समाप्त होता है।)

दूसरे मण्डल के १ ले मन्त्र में अग्नि के जल पत्थर वन और औषधि से उत्पन्न होने की कामना की गई है। २ रे मन्त्र में अग्नि को हवि मय प्रकार का ऋत्विक कहा है। (७ ऋत्विजों के नाम पहले दिये जा चुके हैं। परन्तु बड़े यज्ञों में १६ ऋत्विज तक होते थे —जैसे ऋग्वेद के १ होता २ मैत्रावरुण ३ अच्छावाक ४ ग्रावस्तुत्। यजुर्वेद के १ प्रतिप्रस्थिता २ नेष्टा उन्नेता ४ अध्वर्यु। सामवेद के १ उद्गाता २ प्रस्तोता ३ सुब्रह्मण्य ४ प्रतिहर्ता। अथर्ववेद के १ ब्रह्मा २ ब्राह्मणाच्छंसी ३ पोता ४ आग्नीध्र।

(इनके अतिरिक्त अथर्ववेद में १ सदस्य २ दीक्षितापत्नी ३ शमिता ४ गृहपति ५ अङ्गिरा ६ धर्मा और ७ चमसाध्वर्यु को भी ऋत्विज माना है।)

२ रे सूक्त के १० वें मन्त्र में पञ्च कृष्टि शब्द से पूर्वोक्त चार वर्णों का उल्लेख है।

३ रे सूक्त के ६ ठे मन्त्र में दो स्त्रियों का मिलकर कपड़ा बुनना बताया है।

७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में आर्य अग्नि के विशेषण भारत शब्द का अर्थ भरण कर्ता किया गया है।

११ वें सूक्त के १७ वें मन्त्र में इन्द्र में सोम-पान कर दाढ़ी मूँछ में लगे सोम को झाड़ने की प्रार्थना की गई है। १९ वें मन्त्र में इन्द्र का त्रित की मित्रता के लिए, त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप का वध करना लिखा है।

१२ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में इन्द्र का ४० मास तक खोज कर पर्वत में छिपे शम्बरासुर का पता लगाना और सोते हुए अहि नामक दस्यु को मारना लिखा है।

१३ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में इन्द्र के पास १००० घोड़े होना और उसका दभीति ऋषि के लिए दस्युओं को मारना लिखा है।

१४ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का ९९ हाथ वाले उरण को मारना और अर्बुद को औंधे मुंह पटक कर नष्ट करना लिखा है। ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अन्ध शुष्ण पिप्रु नमुचि और रुधिका को मारना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का शम्बर के नगरों को ध्वस्त करना और वर्चि के १० ००० पुत्रों को मारना लिखा है। ७ वें में इन्द्र का कुत्स आयु और अतिथिग्व के शत्रुओं को मारना लिखा है।

१५ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में इन्द्र का दभीति ऋषि की रक्षा करना लिखा है। ९ ठे में इन्द्र का सिन्धु को उत्तर वाहिनी बनाना कहा है। ७ वें में इन्द्र का परावृज को लंगड़ापन और अन्धापन दूर कर उसको उसके विवाहार्थ आई हुई कन्याओं के पीछे दौड़ने में समर्थ करना लिखाया है। ९ वें में इन्द्र का सोम-पान कर चुमुरि और धुनि नामक असुरों को मारना और दभीति की रक्षा करना कहा है।

१७ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र को घूमते हुए पर्वतों को अचल करना और ७ वें मन्त्र में आजीवन अविवाहिता कन्या को माता पिता से धन की कामना करना प्रकट किया है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र से केवल अपने को धन देने और औरों को न देने की प्रार्थना की गई है।

१९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र को अपने सारथि कुत्स के लिए शुष्ण अंशुप और कुयव को नष्ट करना तथा दिवोदास के लिए शम्बर के ९९ नगरों को नष्ट करना कहा है। ८ वें में शुनःशेप का इन्द्र की स्तुति करना और ९ वें में अन्य लोगों को दक्षिणा न देकर अपने को धन की प्रार्थना है।

२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र को अङ्गिराओं को उनकी चुराई गई गायों के प्राप्त करने का मार्ग बताना और अन्न के प्रधान नगरों

का नष्ट करना लिखा है। ७ वें मन्त्र में कृष्ण-वर्ण दास-सेना का उल्लेख है।

२२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में दव शब्द वृत्रासुर के लिए प्रयुक्त है।

२३ वें सूक्त के ३ रे से १७ वें मन्त्र[1] तक बृहस्पति से शत्रु नाश की प्रार्थना की गई है।

२७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में १ मित्र २ अर्यमा ३ भग ४ वरुण ५ दक्ष और ६ अंश—इन ६ आदित्यों (सूर्यों) के नाम दिये हैं। १० वें मन्त्र में असुर शब्द वरुण का विशेषण है और उसके लिए कहा गया है कि तुम देव हो या मनुष्य हो पर सबके राजा हो। इसी में उससे १०० वर्ष तक देखने देकर पूर्वजों की भोगी आयु का भोग करने देने की प्रार्थना की गई है।

२८ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र में वरुण से अपने को पूर्वजों के और अपने ऋण से मुक्त करने की प्रार्थना की है। इसी में ऋण-कर्ता के लिए आलाव का अभाव होना प्रकट किया है। ९ वें मन्त्र में अपने को भीरु बताकर वरुण से बन्धुओं द्वारा कही जाने वाली स्वप्न की भयङ्कर बातों से और चोरों तथा भेड़ियों आदि से बचाने की प्रार्थना की गई है।

२९ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में आदित्यों से गुप्तप्रसविणी स्त्री के गर्भ की तरह अपने पापों को दूर देश में फेंकने की प्रार्थना है।

(२८ वें और २९ वें सूक्तों की अन्तिम ऋचायें एक ही हैं।)

३० वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में इन्द्र के शम्बिका के प्रधान (असुर-पुरोहित शम्बामक) को मारने का उल्लेख है। १० वें मन्त्र में शत्रुओं को मारकर उनका धन अपने को देने की प्रार्थना है।

३२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में सुई से बुनाई करने का सङ्केत है।

३४ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में रुद्र द्वारा पृश्नी के गर्भ से मरुतों की उत्पत्ति लिखी है। ३ रे मन्त्र में मरुतों के सुवर्ण के शिरस्त्राण का उल्लेख है। १० वें मन्त्र में मरुतों द्वारा पृश्नी के अधो भाग का दोहन करना कहा है। १३ वें मन्त्र में मरुद्गण की क्षोणी नामक वीणा का उल्लेख है।

३५ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में समुद्र से घोड़े (उच्च श्रवा) की उत्पत्ति कही है।

३८ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में स्त्रियों का वस्त्र बुनना प्रकट किया है।

---

१ १५ वें मन्त्र में [illegible] है।